वार

सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को वार की संज्ञा दी गई है। रविवार, मंगलवार, सूर्य संक्रान्ति, वृद्धि योग और हस्त नक्षत्र के दिन ऋण (कर्ज) नही लेना चाहिए। इंगित समय में लिया हुआ ऋण (कर्ज) आसानी से चुकता नही होता और मानसिक तनाव का कारण बनता है, जबकि ये दिन ऋण (कर्ज) चुकता करने के लिए श्रेष्ठ बताए गए हैं। बुधवार धन संग्रह, निवेश करना और बैंक में जमा करना आदि के लिए उत्तम वार है, इस दिन किसी को धन नही देना चाहिए।

वारों के नैसर्गिक स्वभाव, देवता आदि निम्न प्रकार से हैं:-

क्रम संख्या	वार	वारों के स्वामी ग्रह	वारों के देवता		त्याज्य कार्य
1	रविवार	सूर्य	शिव		
2	सोमवार	चन्द्रमा	दुर्गा		
3	मंगलवार	मंगल	कार्तिकेय		धन उधार लेना/ गृह प्रवेश
4	बुधवार	बुध	विष्णु		
5	गुरूवार	बृहस्पति	ब्रह्मा		
6	शुक्रवार	शुक्र	इन्द्र		मांस भक्षण
7	शनिवार	यम/काल			यात्रा

रविवारः को ध्रुव/स्थिर संज्ञक वार कहा जाता है। ध्रुव/स्थिर संज्ञक होने के कारण रविवार स्थिर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- गृह आरम्भ करना, गृह प्रवेश करना, बड़े उद्योग लगाना या आरंभ करना और उपनयन संस्कार आदि के लिए शुभ है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

सोमवारः को चर संज्ञक वार कहा जाता है। चर संज्ञक वार होने के कारण सोमवार चर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- यात्रा आरंभ करना, व्यापार के लिए सामान खरीदना और नौकरी के लिए आवेदन देना या नौकरी आरंभ करना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य हैं।

मंगलवारः को उग्र/क्रूर संज्ञक वार कहा जाता है। उग्र/क्रूर संज्ञक होने के कारण मंगलवार उग्र कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- शस्त्रों से संबंधित कार्य आरंभ करना, हमला या फौजी कार्यवाही शुरू करना और शिकायत करना आदि के लिए शुभ है। इस दिन गृह प्रवेश निषिद्ध है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

बुधवारः को मिश्र संज्ञक वार कहा जाता है। मिश्र संज्ञक होने के कारण बुधवार सभी कार्यों के लिए सामान्य सहायक वार है जैसेः- लेखन कार्य, व्यापारिक कार्य, गणित संबंधित कार्य और बैंक में खाता खुलवाना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है। धन संग्रह करना उत्तम है। इस दिन धन कदापि नही देना चाहिए।

बृहस्पतिवारः को क्षिप्र/लघु संज्ञक वार कहा जाता है। लघु संज्ञक होने के कारण बृहस्पतिवार लघु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- विवाह कार्य आरंभ करना और आध्यात्मिक कार्य आरंभ करना आदि के लिए शुभ है।

शुक्रवारः को मृदु/मैत्री संज्ञक वार कहा जाता है। मृदु/मैत्री संज्ञक होने के कारण शुक्रवार मृदु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- आरामदायक वस्तुओं

को खरीदना, संगीत या ड्रामा आदि का आरम्भ करना और नृत्य कला आदि के लिए शुभ है।

शनिवारः को तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक वार कहा जाता है। तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक होने के कारण शनिवार तीक्ष्ण कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- नई दवा आरंभ करना और दीक्षा लेना आदि के लिए शुभ है। इस दिन यात्रा करना निषिद्ध है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है।

यदि कोई मंगलवार संबंधित आवश्यक कार्य शुक्रवार के दिन करना हो तो ऐसी आपातकाल स्थिति में वार होरा का प्रयोग करके मंगलवार संबंधित कार्य शुक्रवार के दिन किया जा सकता है।

वार होरा

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक 24 होरा होती हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे की होती है। जिस वार में होरा की गणना करनी हो उस वार के सूर्योदय से अगले एक घण्टे तक उसी वार की होरा होती है, उसके बाद दूसरी होरा उस वार से छठे वार की होती है, तीसरी होरा दूसरी होरा वार से छठे वार की होती है यही क्रम आगे चलता रहता है जैसे माना बुधवार को सूर्योदय 7 बजे हुआ तो पहली होरा 7 से 8 बजे तक बुधवार की होगी, दूसरी होरा 8 से 9 बजे तक सोमवार की होगी, तीसरी होरा 9 से 10 बजे तक शनिवार की होगी, चौथी होरा 10 से 11 बजे तक बृहस्पतिवार की होगी। यही क्रम अगले सूर्योदय तक चलता रहेगा।

आवश्यक कार्य अनुकूल वार न मिलने पर भी करना पड़े तो मंगलवार, शनिवार और रविवार को रत्न दान करके कार्य किया जा सकता है।